P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-I*September-2015

मलिक मुहम्मद जायसी कृत कन्हावत की कथानक रूढ़ियों एवं मसनवी भौली का विश्लेषण

चेनाराम
शोध छात्र,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बूंदी, राजस्थान

सारांश

मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'कन्हावत' मध्यकालीन भारतीय संस्कृति की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का कलात्मक दस्तावेज है। भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य में सूफी संतों द्वारा सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक समन्वय का प्रयास किया है। इन्होंने हिन्दू कथा कहानियों और साहित्य को आधार बनाकर तत्कालीन सांस्कृतिक चेतना का परिचय दिया है। मलिक मुहम्मद जायसी इन कवियों में प्रतिनिधि के रूप में प्रसिद्ध है। आचार्य शुक्ल ने लिखा है कि अपनी कहानियों द्वारा इन्होंने प्रेम का शुद्ध मार्ग दिखलाते हुए उन सामान्य जीवन दशाओं को सामने रखा जिनका मनुष्य मात्र के हृदय पर एक–सा प्रभाव दिखाई पड़ता है। हिन्दू हृदय और मुसलमान हृदय आमने–सामने करके अजनबीपन मिटाने वालों में इन्हीं का नाम लेना पड़ेगा। इन्होंने मुसलमान होकर हिन्दुओं की कहानियॉ हिन्दुओं की ही बोली में पूरी सहृदयता से कहकर उनके जीवन की मर्मस्पर्शनी अवस्थाओं के साथ अपने उदार हृदय का पूर्ण सामन्जस्य दिखा दिया। कबीर ने केवल भिन्न प्रतीत होती हुई परोक्ष सत्ता की एकता का आभास दिया था। प्रत्यक्ष जीवन की एकता का दृश्य सामने रखने की आवश्यकता बनी हुई थी, वह जायसी द्वारा पूरी हुई। जायसी कृत कन्हावत जो कि प्रसिद्ध हिन्दू धार्मिक कथा तथा संस्कृतिक पर आधारित है। मध्ययुगीन समन्वयपरक सांस्कृतिक चेतना का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें विविध अभिव्यंजना कथा शैलियों का प्रयोग हुआ है। पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम उनकी प्रसिद्ध कला कृतियां है। पद्मावत पर हिन्दी साहित्य में बहुत कुछ लिखा है। कन्हावत पर अपेक्षा कृत कम लिखा है। प्रस्तुत शोध पत्र में जायसी कृत कन्हावत की अभिव्यंजना शैली–मसनवी शैली तथा कथानक रूढ़ियों के प्रयोग का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया। 'कन्हावत' केवल मलिक मुहम्मद जायसी या भक्तिकाल का ही गौरव–ग्रन्थ नहीं है, वरन् वह तो समूची भारतीय संस्कृति, धर्म, राजनीति और मानवता का प्रेरक प्रकाश–स्तम्भ है, जिसमें जायसी की विविधरूपा सूक्ष्म एवं व्यापक दृष्टि का परिचय मिलता है। यह एक ऐसा वृहत्त् एवं व्यापक काव्य–सरोवर है, जिसमें भारतीय संस्कृति और सभ्यता की युगों–युगों की कथा समाविष्ट है। भारतीय साहित्य में प्राचीन समय से चली आ रही कथानक रूढ़ियों का प्रयोग कन्हावत को विशिष्टता प्रदान करता है, साथ ही कवि की भारतीय संस्कृति एवं साहित्य की ज्ञानशीलता व उदारता का भी परिचय देता है।

मुख्य शब्द : सांस्कृतिक समन्वय, मसनवी, शैली, जायसी, कन्हावत, कथानक रूढि।

प्रस्तावना

'कन्हावत' केवल मलिक मुहम्मद जायसी के साहित्य या भक्तिकाल का ही गौरव–ग्रन्थ नहीं है, वरन् वह तो समूची भारतीय संस्कृति, धर्म, राजनीति और मानवता का प्रेरक प्रकाश–स्तम्भ है, जिसमें जायसी की विविध रूप सूक्ष्म एवं व्यापक दृष्टि का परिचय मिलता है। यह एक ऐसा वृहत् एवं व्यापक काव्य–सरोवर है, जिसमें भारतीय संस्कृति और सभ्यता की युगों–युगों की कथा समाविष्ट है। इसकी रचना 12 खण्डों या सुर्खियों' के नाम से है, जो इस प्रकार है– 1. मथुरा नगर वर्णन–खण्ड, 2. कन्ह जन्म–खण्ड, 3. कंस सपन–खण्ड, 4. पाताल–खण्ड, 5. चन्द्रावली तपा–खण्ड, 6. दानी–खण्ड, 7. नख शिख–खण्ड, 8. कंस वध–खण्ड, 9. षट् ऋतु वर्णन–खण्ड, 10. राधा गोपी वियोग–खण्ड, 11. पवन दूत–खण्ड, 12. गोरख कन्ह बेवाद–खण्ड। **श्री शोभनाथ पाण्डेय** की प्रति मे भी प्रायः खण्ड–विभाजन नहीं है जिन कडवकों के प्रारम्भ में शीर्षक दिए गए है वे इस प्रकार है :– 1. गोकुल–खण्ड, 2. कन्ह जन्म–खण्ड, 3. बासुकी नाग–खण्ड, 4. चन्द्रावली कन्ह–खण्ड, 5. राही–चन्द्रा बेवाद–खण्ड, 6. कुबजा–संजोग–खण्ड, 7. राही वियोग–खण्ड, 8. अवसान–खण्ड। अर्थात् प्रति

जर्मनी में केवल एक खण्ड का नाम मिलता है श्री चन्द्रबली सिंह की प्रति में बारह और श्री शोभनाथ पाण्डेय की प्रति में आठ खण्डों के नाम मिलते है। वस्तुतः 'कन्हावत' मूलतः मसनवी–आदर्श पर सृजित है। मसनवी में कथा श्रृंखला की भाँति होती है –

मसनवी काव्य परम्परा एवं कन्हावत

'मसनवी' शब्द अरबी भाषा का है। यह फारसी भाषा का एक विशिष्ट काव्यरूप है। कन्हावत को फारसी की मसनवी काव्य परम्परा का ग्रन्थ माना जाता है। आचार्य शुक्ल ने फारसी की मसनवी काव्य पद्धति का विवेचन करते हुए लिखा है कि– ''मसनवी के लिए साहित्यिक नियम तो केवल इतना ही समझा जाता है कि सारा काव्य एक ही मसनवी छन्द में हो, परम्परा के अनुसार उसमें कथारम्भ से पहले ईश्वर–स्तुति, पैगम्बर की वंदना और उस समय के राजा (शाहेवक्त) की प्रशंसा होनी चाहिए। ये बातें पदमावत, इन्द्रावती, मृगावती इत्यादि सब में पायी जाती है।'' तथा ''इन प्रेमगाथा काव्यों के संबंध में पहली बात ध्यान देने की यह है कि इनकी रचना बिल्कुल भारतीय चरित काव्यों की सर्गबद्ध शैली पर न होकर फारसी की मसनवियों के ढंग पर हुई है जिनमें कथा सर्गों या अध्यायों में विस्तार के हिसाब से विभक्त नहीं होती, बराबर चली चलती है, केवल स्थान–स्थान पर घटनाओं या प्रसंगों का उल्लेख शीर्षक के रूप मे दिया रहता ह।''[1]

डॉ. शम्भुनाथ सिंह का मत है कि– ''मसनवी वह काव्य रूप है जिसमें प्रत्येक छंद (वर्स) साधारणतः व्याकरण और भाव की दृष्टि से पूर्ण होता है और दो पंक्तियाँ या मिसरा समतुकान्त होते हैं और उन दोनों पंक्तियों के तुक आगे की पंक्तियों के तुकों से नहीं मिलते।''[2]

फारसी की मसनवियों में सर्ग विभाजन भारतीय प्रबन्ध काव्यों के अनुरूप न होकर पुराणों के अनुसार घटनाओं के शीर्षकों के रूप में होता है। शुक्लजी ने इन शीर्षकों को 'खण्ड' की संज्ञा दी है। प्रत्येक खण्ड का शीर्षक उसमें वर्णित विषय के अनुरूप रहता है और अन्त में उपसंहार होता है जिसमें कवि रचना–काल आदि का निर्देश अथवा कोई उपदेशात्मक बात कहता है। फारसी मसनवियों के चार प्रकार और उनका संक्षिप्त परिचय– (1) बड़े–बड़े महाकाव्य। (2) पर्याप्त विस्तार वाले प्रेमाख्यानक काव्य (3) अल्प विस्तार वाले आख्यानक काव्य (4) ध्येय विशेष को लेकर लिखी गई कथाएँ, जिनका संग्रन्थन कच्चे सूत्र के आश्रय पर कर दिया गया है। (1) फिरदौसी का 'शाहनामा' विस्तृत विशालकाय 2500 पृष्ठों का महाकाव्य है। 'एन्साइक्लोपीडिया आव इस्लाम'[3] के अनुसार यह मसनवी काव्य है। (2) दूसरे प्रकार की मसनवियों में लिखे गए प्रेमाख्यानकों का बाहुल्य है। फिरदौसी कृत 'युसूफ जुलेखा'[4] इस प्रकार की प्राचीनतम रचना है। फारसी प्रेमाख्यानक परम्परा का सर्वश्रेष्ठ कवि निजामी हुआ है। शीरी–फरहाद, लैला–मजनूँ और हफ्तपेकर उसकी अत्यन्त ख्याति प्राप्त मसनवियाँ है। जामीकी युसूफ–जुलेखा भी मसनवी शैली का ग्रन्थ है। भारतीय ग्रन्थों मे अमीर खुसरो कृत 'लैला–मजनूँ' और फैजी कृत 'नल–दमन' मसनवी काव्य परम्परा के प्रसिद्ध प्रेमाख्यान है। (3) खुसरों की अन्य मसनवियाँ भी इसी परम्परा के अन्तर्गत आती है। (4) इस वर्ग का प्रतिनिधि कवि जलालुद्दीन रूमी है। ये काव्य उपदेश प्रधान है।

हिन्दी साहित्य के प्रेमाख्यान काव्यों का न्यूनाधिक संबंध फारसी की प्रेमाख्यानक मसनवियों से है। हिन्दी की प्रेमाख्यानक परम्परा में मुसलमान कवि अधिक है। ये लेखक फारसी भाषा के भी जानकार होते थे। फारसी की प्रेमाख्यानक मसनवियों की भाँति हिन्दी के प्रेमाख्यानक काव्यों में भी प्रारम्भ में स्तुति–खण्ड की योजना की जाती है। उसमें ईश्वर, मुहम्मद, शाहे वक्त, तत्कालीन खलीफा, गुरू की वन्दना, कवि का अल्प परिचय एवं कथा की भूमिका का निर्देश किया जाता है। इस प्रकार फारसी एवं हिन्दी के प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा का सूक्ष्म विवेचन करने के उपरान्त जायसी कृत 'कन्हावत' में कवि द्वारा फारसी एवं हिन्दी के प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा का पालन करते हुए मसनवी शैली का विवेचन व विश्लेषण निम्नुसार है :

हम्द (ईश्वर–स्तुति)

सूफी कवि अपनी मसनवी के प्रारम्भ में 'हम्द' की परम्परा का पालन करते हैं। जायसी ने 'कन्हावत' में भी प्रारंभ में ईश्वर–स्तुति की योजना की है। वे कहते हैं कि साधारण मनुष्य अपनी जिह्वा से ईश्वर की वन्दना कभी पूर्णरूपेण नहीं कर सकता है। क्योंकि जिस ईश्वर ने इस संसार की रचना की है वह अथाह और अनन्त है। जायसी ने अपनी रचनाओं में ईश्वर की वन्दना की है। वे 'कन्हावत' के प्रारम्भ में ईश्वर–स्तुति इसप्रकार करते हैं जैसे –

झूठा गरब कीन्ह जिन तति खब, सुन संसार।
हों हउँ कह पछताए, जबरे परै मुँह छार।
ताकरः असतुति कीन्ह न जाई।
कौन जीह अस करौ बडाई।।
जो (तन बहोत मुखहि) खौले।
सहस जीह एक–एक एक बोलै।।
सतवाँ लिखी सिष्टि सब आई।
सब से ही लेइ लिखि बिसराई।।
का बरनौ सो अइस समुंदू।
भा संसार न मुख मां बुंदू।।
सात सरग औ धरती साता।
जग उपजै औ जाइ हिराता।।
ओकर आस सबकै सब कहई।
वह न आस काहू कै चहई।।
जेत अहै जित होई जेति गा संसार।
सबहि दिहसि औ देइहि तो ओहि भरा भंडार।[5]

मुहम्मद साहब की प्रशंसा (नअत)

ईश्वर की स्तुति के पश्चात् कवि ने पैगम्बर मुहम्मद साहब का पावन स्मरण किया है। उनका स्मरण करने से मन गदगद हो जाता है। उन्होंने ही इस सृष्टि का निर्माण किया है और उन्हीं के प्रेम के कारण ईश्वर ने सारे संसार को सजाया है–

कहौं मुहम्मद दोसरे ठाऊँ।
जीह मिठान लेत मुख नाऊँ।।
पहिलैं दीन सो सिरजा नूरू।
तो सिष्टी करभो अंकुरू।।
जो न होत प्रेम वह जोती।
तोनां सरग न धरती होती।।

तो उपजत न यह संसारा।
होत न चाँद सुरूज उजियारा।।
ओहि कैं प्रीति सभै जग साजा।
बरन–बरन सब कछु उपराजा।।
जो आयत उन्ह लिखी बनाई।
उहैं तंत (जग) चलेउ चलाई।।[6]

चार मित्रों की प्रशंसा (मंकबत)

कवि ने अपनी हृदय भावना के साथ पद्मावत की भाँति मुहम्मद साहब के चार मित्रों का उल्लेख किया है, जो पैगम्बर रसूल के बडे निकट थे।

चारि मीत बिधनै बड कीन्हें।
नबी रसूल के गौहने दीन्हें।।
पहिलै अबाबकर सत बारू।
एक मंत्री औ बीर अपारू।।
दोसरै उमर पोरूख हुत आदी।
जिता न कोई बादि के बादी।।
तिसरैं उसमा पंडित सयानी।
पुढि पुरान जिन्ह अरथ बखानी।।
चौथे अली सिंध बरियारू।
खरग देखि काँपे संसारू।।
जो रसूल बिधि आयसु दीन्हाँ।
सोई बचन जेहि मिलि कीन्हाँ।।
और जिनहिं मिल एक मत मता।
मारि सींह आनां दोइ।।[7]

शाहे वक्त का वर्णन (मदह)

मलिक मुहम्मद जायसी ने अपनी सभी रचनाओं में मसनवी परम्परा के अनुसार शाहे वक्त की प्रशंसा के नियम का पालन किया है। कवि ने मसनवी काव्य परम्परानुसार 'कन्हावत' में हूंमायूं का यशोगान किया है। इसी तरह 'आखिरी कलाम' में 'बाबर' का और पद्मावत में 'शेरशाह' का यशोगान किया है। जायसी ने अपनी हृदयगत भावना के रूप में तत्कालीन शासक 'हूंमायूं' का उल्लेख किया है जसे–

देहली कहौं छत्रपति नाऊँ।
बादशाह बड़ साह हुमायूं।।
जेन भरि कीन्ह नवो खंड दाँड़ा।
चहुँ दिसि समुंद परवारा खाँडा।।
सात दीप बरिआई आनां।
आठहु दिसां परी अहानां।।
कै तुरकान सकल दुनियाई।
अदल कीन्ह उमर कै नाई।।
गऊ सिंध गौनहिं एक बाटाँ।
पानी पियहि दोउ एक घाटाँ।।
औ दातार सराहौं काहा।
हेतिम करन न सरबरि आहा।।
खोलि दीन्ह बन समुंद भंडारू।
मांगत सब अधान सयँसारू।।
सभै प्रिथिमी असीसै,
देखि–देखि एम साज।
छात–पाट तुम सोहै,
करउ सदा सुख राज।।[8]

फारसी की मसनवियों के साथ ही यह परम्परा हिन्दी की प्रायः सभी मसनवियों में विद्यमान है। 'शाहे–तख्त' वर्णन की परम्परा एक रूढि बन गई थी।

गुरू–स्मरण (तज्किराए मुर्शिद)

फारसी के साथ ही हिन्दी मसनवियों में भी कवि अपने पीर, मुर्शिद या गुरू की प्रशंसा करते हैं। जायसी ने 'कन्हावत' के पूरे दो पदों–छन्दों मे पीर–मुर्शिद परम्परा का उल्लेख किया है। यथा–

''कहौ सरीअत पीर पियारा।
सैयद असरफ जग उजियारा।।
साजा जहाँगीर कुल माहाँ।
धूप जरत पाई जग छाहाँ।।
निरमल चिस्ती निरमल आसू।
भूले सबहिं दीन्ह उपदेसू।।
समुंद मांझ बोहित अस खेवहिं।
लागहि पार बार जो सेवहिं।।
बोहित लीन्ह चढ़ाई।
समुंद देखि जल जेउ न डराई।।
भा दरसन हिय निरमल भएऊ।
पायो धरम पाप सब गएऊ।।
अस जो सेवै मन चितलाई।
इंछा पूजै आस तौलाई।।
दास भएउँ हौ एहिं गुरू।
नित तेहिं सेवँउँ बार।।
गाढ परे महि जहाँ,
बेगि करहिं निसतार।।[9]

एवं

कहौ तरीकत अगुवा गुरू।
रोशन दीन दुनी सुरखुरू।।
औ तेहि दरस गुसाइक पावा।
दानियाल गुरू पंथ लखावा।।
अलहदाद कुल सिद्ध नवेला।
सैयद मुहमद कै सग चेला।।
सैयद मुहमद महदी साजा।
दानियाल दीनै सिध बाजा।।
दनियाल लौ परगट कीन्हाँ।
दजरत ख्वाज खिजिर तेहि दीन्हाँ।।
जुग–जुग अमर हजरत ख्वाजे।
नजरत नबी रसूल निवाजे।।
खरग दीन्ह मैं जाकौं,
देखि डरै इबलीस।
जपा जपत सों भागै,
डोमिनी औहट भा सीस ।।[10]

इस प्रकार हम मसनवी काव्य परम्परा की दृष्टि से चिन्तन करे तो कवि ने हृदयगत पवित्र भावनाओं से अपनी मौलिक सर्जना का परिचय दिया है।

कन्हावत में कथानक रूढ़ियों का प्रयोग

सूफी कवियों ने भारतीय कथाओं में व्यवहृत कथानक रूढ़ियों का भी व्यवहार किया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि कथानक को गति देने के लिए सूफी कवियों ने प्रायः उन सभी कथानक रूढ़ियों का व्यवहार किया है जो परम्परा से भारतीय कथाओं में व्यवहृत होती रही है।'[11] जायसी ने अपनी रचनाओं में

कथानक रूढ़ियों का सफल प्रयोग कर भारतीय साहित्य और परम्परा की गहरी अध्ययनशीलता का परिचय दिया है। कन्हावत में कृष्ण के जन्म से लेकर मृत्यु तक विषद् वर्णन किया गया है। कवि ने पौराणिक एवं लोक मानस से प्राप्त ज्ञान के आधार पर इसकी व्यंजना की है। जायसी ने कन्हावत के कथानक में उन समस्त कथानक रूढियों का समावेश किया है जो प्राकृत संस्कृत एवं अपभ्रंश के चरित्र काव्यों में परम्परा से चली आ रही थी। कुछ पारम्परिक कथानक रूढियाँ इस प्रकार है – माता पिता के द्वारा किसी देवी देवता की विशेष आराधना करने से संतान का जन्म होना तथा नायिका का अत्यन्त रूपवती होना, किसी पक्षी द्वारा नायक या नायिका के रूप–गुण का वर्णन सुनकर प्रेमभाव उत्पन्न होना, स्वप्न–दर्शन या चित्र–दर्शन द्वारा प्रेम या भय उत्पन्न होना, शिव मंदिर मे नायक नायिका का गुप्त मिलन, पशु पक्षियों की वार्ता से भावी घटना का अनुमान कर लगाना, शिव–पार्वती द्वारा नायक के कष्ट देखकर उनकी सहायता करना, युद्ध में देवताओं का सहयोग नायक को मिलना, पार्वती द्वारा नायक के प्रेम की परीक्षा लेना, सिद्धि पाने के लिए नायक द्वारा जोगो बनकर निकलना, समुन्द्र आदि का ब्राह्मण वेश धारण करके उपस्थित होना एवं बहुमूल्य उपहार प्रदान करना, नायिका या प्रेमिका को पाने के लिए दूति भेजना, पति की मृत्यु के उपरान्त पत्नी का सती हो जाना, किसी नायिका का नायक के लिए निमित होना, नायक द्वारा अनेक कष्ट झेलना और अन्त में अपने उद्देश्य मे सफल होना।

कन्हावत की कथा का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि जायसी ने इस कथा में अपने समय में प्रचलित कुछ कथानक रूढियों का प्रयोग किया है जैसे– कृष्ण का अवतार लेना एवं अवतार लेकर अत्याचारी का वध करना। यह भी उस समय से लेकर वर्तमान तक भी एक रूढि है, जिसका जायसी ने पालन किया है जैसे –

निसी भादों आही अँधियारी।
नैन न सूझै हाथ पसारी।।
तवहि सो कन्ह लीन्हि अवतारू।
अछ रिह रचा मंगलाचारू।।
विषि सुनि निदेष जोग संचारे।
साचे दूत जन्हुत रखवारे।।
सुनि निखरे देवता अनन्दू।
जगत प्रगट भा बाल गोविन्दु।।
अति सुदिष्टि परमेसर हेरा।
बन्दि मोख भा सबही केरा।।
जनु अँधियारे दीपक बारा।
सरगै मंदिर भयउ उजियारा।।
वसुदेव मन्दिर चन्द अवतरा।
सहस करौं जोति निरमरा।।
मन बिहसें रिखि देवता,
गुनि गँधरव सब आई।।
सूरज चन्द तराई रहसी,
करहिं बधाई।।[12]

स्वप्न दर्शन या चित्र दर्शन द्वारा भय उत्पन्न होना

इसी रूढि के अनुसार कंस एक बार जब गहरी नींद मे सो रहा था उस समय स्वप्न आया। जिसमें एक छोटा–सा बालक हाथ में बंशी लेकर उसकी छाती पर आ बैठा और जोर–जोर से शेर की गर्जना करने लगा, उसे ऐसा दृश्य देखकर वह डर जाता है और उसे ऐसा लगता है कि साक्षात् यम–दूत् उसे लेने आ गया हो।

एक रात सूत हा कंसू।
आवा पुरूख बजावत बंसू।।
ऊपर चढि तस मारसि हाका।
डरपा कंस बोला मुख थाका।।[13]

शिव मंदिर में नायक नायिका का गुप्त मिलन

इसी रूढ़ि परम्परा का निर्वाह कन्हावत में भी किया गया है जब कृष्ण ने पहली बार चन्द्रावली को अपने घर विजय उत्सव समारोह में देखा तो वे उसे देखकर मुर्च्छित हो जाते है। और आगे चन्द्रावली की दासी अगस्त की योजनानुसार वे अगले दिन योगी वेश में चन्द्रावली के बगीचे में जा बैठते हैं। वहां पर चन्द्रावली एवं उनका पुनः मिलन होता है –

हँस के कन्ह गही पुनि बाही।
चलहु चाँद छोड़ों तिह नाहीं।।
आज देखि रंग बा जाहू।
जो मोहि रंग और नहि काहू।।
हौं रे कन्ह चन्द्रावली।
सिरजिह चाँद भा निर्मली।।
जिंह कर चान्द सूरज अरू नाऊँ।
इनो कस न होई एक ठाऊँ।।[14]

नायिका या प्रेमिका को पाने के लिए दूती भेजना

जिस प्रकार इस रूढि का प्रयोग कवि ने पद्मावत में बहुत ही सुन्दर तरीके से किया है, ठीक उसी तरह कन्हावत कथा में भी बहुत ही व्यवस्थित तरीके से वर्णन किया है, जब कृष्ण ने कंस का वध करके उसके पुत्र का राज्यभिषेक किया और उसके बाद वे लगभग एक वर्ष तक मथुरा में ही कुब्जा के साथ भोग में लिप्त रहे थे, तो ऐसी स्थिति में इधर गोकुल में गोपियाँ विरह व्यथा में ग्रस्त रहती है। वे अपने प्रियतम को निष्ठुर तक कहने लगती है और अपना संदेश पवन के माध्यम से भेजने लगती है और उसे बड़ी शालिनता के साथ विनयपूर्वक अपनी व्यथा प्रियतम को कहने को आतुर होती है उसे संदेश भेजने कहती है –

पाँयहि परि बिनवहि गोपिता।
ऐ हनुवँत वीर के पिता।।
कन्ह प्रेम हमकों भा मरनाँ।
बिरह जरत ताके तव सरनाँ।।
वह रे बिछोहा मधुवन जहाँ।
लेर संदेश पहुचा वहु तहाँ।।[15]

इस प्रकार गोपियों ने विस्तार से अपनी दषा मनोदशा के विषय में पवन को बतलाया और उसे कृष्ण तक पहुँचाने को कहा। पवन ने दूत कर्म स्वीकार किया।

सुनत संदेश पवन पुनि दहा।
चला बेगि जस गोपहि कहा।।[16]

नायक द्वारा अनेक कष्ट झेलना और अन्त में अपन उद्देश्य में सफल होना

कथा के प्रारम्भ से अन्त तक सूक्ष्म तरीके से अध्ययन करने पर हमें उपर्युक्त रूढ़ि का पता चल पाता है। इसके विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस कथा

के प्रारम्भ से ही कृष्ण का जन्म घोर विपदा में एवं अन्त भी एक ऋषि के शाप से होता है। फिर भी कृष्ण का जिस उद्देश्य से जन्म या अवतार होता है वे अवतार लेकर पृथ्वी पर अत्याचारी शासक कंस का वध करके वसुधरा को पाप से मुक्ति दिलाते हैं और सभी के सुखी एवं सम्पन्न होने की परम्परा लागू करते हैं। इस प्रकार अपने उद्देश्य को पूर्ण करके बाद में एक मछेरे के बिचाखा से उनका प्राणान्त हो जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिन्दी का सूफी प्रेमाख्यानक काव्य कन्हावत, प्रबन्ध रूढि एवं अनेक काव्य रूढियाँ आदि की दृष्टि से फारसी के मसनवी काव्यों से प्रभावित है जिसमें कहीं–कहीं भारतीय प्रभाव भी लक्षित होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जायसी ग्रन्थावली, सम्पादक– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रकाशक– नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 18वाँ संस्करण संवत् 2052 वि., पृ. सं. 109।
2. संक्षिप्त जायसी, शम्भूदयाल सक्सेना, पृ. सं. 19।
3. एन्साक्लोपीडिया आव इस्लाम (1936) भाग 3, पृ. सं. 410–11 तथा ब्राउन ए लिटररी हिस्ट्री आव परशिया (1919) पृ. सं 473।
4. एन्साक्लोपीडिया आव इस्लाम (1936) भाग 3, पृ. सं. 411।
5. मलिक मुहम्मद जायसी कृत, कन्हावत, सम्पादक– डॉ. शिव सहायक पाठक, प्रकाशक– साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई. कडवक– 01।
6. मलिक मुहम्मद जायसी कृत, कन्हावत, सम्पादक– डॉ. शिव सहायक पाठक, प्रकाशक– साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई. , कडवक – 02।
7. मलिक मुहम्मद जायसी कृत, कन्हावत, सम्पादक– डॉ. शिव सहायक पाठक, प्रकाशक – साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई. , कडवक– 03।
8. मलिक महम्मद जायसी कृत, कन्हावत, सम्पादक– डॉ. शिव सहायक पाठक, प्रकाशक– साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई. कडवक – 04।
9. मलिक मुहम्मद जायसी कृत, कन्हावत, सम्पादक– डॉ. शिव सहायक पाठक, प्रकाशक– साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई.।, कडवक– 05।
10. मलिक मुहम्मद जायसी कृत, कन्हावत, सम्पादक– डॉ. शिव सहायक पाठक, प्रकाशक– साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1981 ई., कडवक– 06।
11. जयकिशन खण्डेलवाल– हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियां विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा संस्करण 1990 पृ.सं. –198।
12. मलिक मुहम्मद जायसी कृत, कन्हावत, सम्पादक– परमेश्वरी लाल गुप्त, प्रकाशक– अन्नपूर्णा प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण अप्रैल 1981 ई, छन्द– 49, पंक्ति 5–9।
13. मलिक मुहम्मद जायसी कृत, कन्हावत, सम्पादक– परमेश्वरी लाल गुप्त, प्रकाशक– अन्नपूर्णा प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण अप्रैल 1981 ई, कडवक– 60, पंक्ति 1–2।
14. मलिक मुहम्मद जायसी कृत, कन्हावत, सम्पादक– परमेश्वरी लाल गुप्त, प्रकाशक– अन्नपूर्णा प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण अप्रैल 1981 ई, कडवक– 225, पंक्ति 1–4।
15. मलिक मुहम्मद जायसी कृत, कन्हावत, सम्पादक– परमेश्वरी लाल गुप्त, प्रकाशक– अन्नपूर्णा प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण अप्रैल 1981 ई, कडवक – 320, पंक्ति 3–5।
16. मलिक महम्मद जायसी कृत, कन्हावत, सम्पादक– परमेश्वरी लाल गुप्त, प्रकाशक– अन्नपूर्णा प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण अप्रैल 1981 ई, कडवक– 323, पंक्ति 1।